BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

# मौर्य राज्य का राज्यशास्त्रीय मूल्यांकन

**डॉ पिंकी कुमारी**
रिसर्च स्कॉलर ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा

**सारांश:-**

मौर्य साम्राज्य, जो 322 ईसा पूर्व से 185 ईसा पूर्व तक भारत के अधिकांश भाग में फैला हुआ था, प्राचीन भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इसके संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य ने नंद वंश को पराजित करके इस साम्राज्य की नींव रखी। मौर्य साम्राज्य की राजनीतिक संरचना अत्यंत संगठित और कुशल थी, जिसमें एक मजबूत केंद्रीय सत्ता थी। चंद्रगुप्त के बाद उनके पोते अशोक ने साम्राज्य को और भी विस्तारित किया और इसे एक समृद्ध और स्थिर शासन में परिवर्तित किया। अशोक के शासनकाल में "धर्म" की अवधारणा को अपनाया गया, जिसने न केवल राजनीतिक स्थिरता को बढ़ावा दिया, बल्कि सामाजिक समरसता को भी प्रोत्साहित किया। आर्थिक दृष्टिकोण से, मौर्य साम्राज्य ने व्यापार और कृषि को केंद्र में रखा। व्यापारिक मार्गों का विकास हुआ, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के बीच संसाधनों का आदान-प्रदान संभव हुआ। अशोक के शासन में कर प्रणाली को सुव्यवस्थित किया गया, जिससे राज्य को आवश्यक वित्तीय संसाधन प्राप्त हुए। इसके अलावा, साम्राज्य ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया, जिसने सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव लाए। अशोक ने अपने शासन में सहिष्णुता और नैतिकता को बढ़ावा दिया, जिससे विभिन्न जातियों और धर्मों के बीच सामंजस्य स्थापित हुआ।

मौर्य साम्राज्य का राज्यशास्त्रीय मूल्यांकन इसकी नेतृत्व क्षमता, प्रशासनिक दक्षता, और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। यह साम्राज्य केवल एक राजनीतिक इकाई नहीं था, बल्कि यह भारतीय सभ्यता के विकास में एक आधार के रूप में कार्य करता था, जिसने भविष्य की शासकीय प्रणालियों और सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित किया। इस प्रकार, मौर्य साम्राज्य का अध्ययन आज भी प्रासंगिक है और यह भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना हुआ है।

**मुख्य शब्द :-** साम्राज्य, इतिहास, राजनीतिक, अध्ययन, विचारधारा, लोकमत।

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

मौर्य राज्य का विश्लेषण कई राज्य शास्त्र के विद्वानों ने शास्त्रीय ढंग से करने की शुरूआत की है। इसमें जहाँ ए.एस. अल्तेकर, बेनी प्रसाद आदि ने मौर्य राज्य को राज्य के आधुनिक आंगिक सिद्धान्त पर कसने का प्रयास किए हैं। वहीं रामशरण शर्मा, रोमिला थापर आदि कई इतिहासकारों ने विचारात्मक पैमाने पर मौर्य राज्य की व्याख्या का प्रयास किए है। इन दोनों पद्धतियों के अतिरिक्त एक तीसरा प्रयास यह किया जा रहा है कि मौर्य राज्य का गठन, संचालन और नियंत्रण का मुख्य उद्देश्य एक सम्पन्न राज्य राष्ट्र के निर्माण का रहा था। चूँकि मौर्य के पूर्व भारत में राज्य का विकास जिस क्षेत्रीय ढंग से विकसित होना शुरू हुआ था, उसके अंतर्गत जनपदीय राज्य की संरचना भारतीय उपमहाद्वीप की प्राकृतिक सीमा को चूमना रहा था और इसके लिए जनपदीय राज्य संघर्ष का सिलसिला चलता रहा। नन्दो के साथ भारतीय उपमहाद्वीप की प्राकृतिक सीमा को चूमने का प्रयास जारी रहा था। किन्तु राज्य के प्रसार के साथ जो मानवीय लालच तथा बुराई के चलते ठिठकने लगा था। मौर्यो के अधीन उसे तोड़कर आगे बढने का काम किया गया था। यह इसलिए संभव हो सका कि स्वयं मगध की राजधानी पाटलिपुत्र में एक ऐसे राजनीतिक विचारधारा वाली शिक्षा और विचारक का समूदाय पैदा लेने लगा था, जो मगध की असीम भौतिक क्षमता के उच्चतम उपयोग से उसे राष्ट्रीय आकार देना चाहता था। राजनीतिक अर्थशास्त्र की विचारधारा के तहत भारतीय राज्य राष्ट्र के निर्माण का लक्ष्य कौटिल्य के द्वारा आगे बढ़ाया गया था। अतः मौर्य राज्य का विशलेषण और समीक्षा सिर्फ उसके सप्तांग राज्य सिद्धांत के अंतर्गत करने से उसका एक बड़ा राजनीतिक उद्येश्य अछूता रह जाता है, जो भारतीय राज्य राष्ट्र का निर्माण करना रहा था।

रामशरण शर्मा ने इस मुद्दे को साथ लेते हुए मौर्य साअहमियत का लोगों में एहसार हो और वह अराजकतावादी कुप्रवृति की ओर नही बढ़े, बल्कि आर्थिक, सामाजिक सम्पन्नता के धरातल पर एक प्रबुद्ध लोगों वाली राज्य और समाज स्थापित हो सके। अतः मौर्य राज्य की शास्त्रीय समीक्षा को इन्हीं तीन आधार पर यहाँ आंकने का प्रयास किया जा रहा है। रावण, दरभंगा प० एच० डी० मौर्य राज्य का राज्यशास्त्रीय स्वरूप क्या रहा था, इसको लेकर चार तरह की प्रतिस्थापना स्थापित किया गया है। कुछ विद्वान मानते हैं कि मौर्य और राजनीति सैनिकतंत्र रहा था, दूसरा इसके विरोध में यह मानते हैं कि मौर्य राज्य भारतीय समाज के पितृसत्तात्मक आदर्श पर आधारित रहा था। तीसरे समुह के विद्वान मौर्य राज्य और राजनीति को आधुनिक

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

तरह के वैधानिक राजतंत्र की संज्ञा देते हैं। इसी में चौथा समुह यह जोड़ डालते है कि मौर्य राज्य आधुनिक तरहके लोक-कल्याणकारी राज्य का प्रारूप रहा था। अतः इस चारो तरह के प्रतिस्थापना के बीच मौर्य राज्य और राजनीति की समीक्षा इस शोध प्रबन्ध के नवें अध्ययन में किया गया है। इसकी यहाँ संक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है। अपने समय का मौर्य राज्य सबसे बड़ा सैनिक शक्ति वाला राज्य रहा था। मेगास्थनीज और प्लिनी को माने तो मौर्य राज्य के अधीन छः लाख पैदल सेना, तीस हजार अश्वरोही, तीन हजार गज और नौसेना तथा इसके सहयोग के लिए हजारों की संख्या में अस्त्र, शस्त्र, रसद-पानी पहुँचाने वाली अधिकारी लगे हुए थे। मौर्य राजा स्वयं सेना का प्रधान होता था और सैनिकों के अभ्यास से लेकर युद्ध की तैयारी और उसका नेतृत्व करता था। उसके अधीन सेनापति और परराष्ट्र मंत्री दो बड़े केन्द्रीय प्रशासक देख-रेख का काम करते थे।

मौर्यो के नीति-निर्धारण करने वाली अतरंग मंत्री-परिषद के यो दोनों स्थायी सदस्य होते थे। यह स्वाभाविक रहा था कि भारत में उतने बड़े राजतंत्र की स्थापना की सफलता को कायम रखने के लिए केन्द्र से लेकर दूरस्थ प्रांतों तक इसकी व०, दरभंगा पा० एच० डी० शोध प्रबंध-इतिहास आवश्यकता रही थी। राज्य की सीमा की सुरक्षा और आंतरिक शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए मुख्य-मुख्य बिन्दु पर सैन्य शिविर स्थापित किये गये थे। राजकुमारों को भी सैन्य प्रशिक्षण दिया जाता था। अत: मौर्य राज्य में सैनिकों की प्रमुखता रहने के चलते इसे कुछ विद्वान सैन्यतंत्र माने हैं। जबकि वस्तुस्थिति रही थी कि सेना मौर्य राज्य और राजनीति के सात अंगों में सिर्फ दो अंग रहा था। दुर्ग और बल, जबकि पाँच अंग गैर सैनिक रहे थे। अतः सेना सिर्फ सुरक्षा और शांति व्यवस्था के लिए रही थी, जबकि राज्य का संचालन गैर सैनिक से होता था। इसलिए इसे सैन्यतंत्र कहना सही नहीं होगा। दूसरे समूह के विद्वान अशोक के अभिलेख के आधार पर मौर्य राज्य और राजनीति को पितृसत्तात्मक राज्य कहना पसंद किऐ हैं। अशोक द्वितीय कलिंग शिला प्रज्ञापन में जोर देकर कहा है कि सारी प्रजा मेरी संतान है और जिस तरह राजा अपने संतान के इहलोक और परलोक की सुख-सुविधा के लिए चिंतित रहता है। उसी तरह अशोक अपनी प्रजा के इहलोक और परलोक की सुख-शांति की कामना करता है। अशोक के यह कहने का गर्ज रहा था कि कौटिल्य ने अपने राजा को नृप कहा था,

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

जिसका अभिप्राय प्रजा को पालन-पोषण करना था। अतः अशोक कोई नई बात अपने राजत्व के सिद्धान्त में उद्घोषित किया था। कौटिल्य के राजनीतिक अर्थशास्त्र की विचारधारा रही थी कि राज्य का काम प्रजा का पालन-पोषण करना है। इसलिए अशोक अपने धम्मलेखों में एक ओर तो अपना कर्त्तव्य तो दूसरी ओर प्रजा को कर्त्तव्य को निर्देशित करते हुए एक सम्पन्न, सबल राज्य के साथ सम्पन्न प्रजा के होने की अहमियत को दिया था। अतः प्रजा और राजा का सम्बन्ध संतानवत कहने के पीछे कोई पितृसत्तात्मक सिद्धांत का कानून और प्रशासन नहीं रहा था। प्रजा का अधिक से अधिक भौतिक कल्याण कौटिल्य और अशोक दोनों मानते रही थी। किन्तु यह आधुनिक तरह का लोककल्याणकारी राज्य नहीं रहा था, मिश्रित अर्थशास्त्र ही नहीं बल्कि अनुवांशिक राजतंत्र रहा था। लोकमत अभी पैदा ही नहीं लिया था। इसलिए इसे प्राचीन तरह का प्रजा हितैषी राज्य तक ही कहना सही होगा। इस तरह ऊपर के चारों प्रतिस्थापनाओं की समीक्षा से स्पष्ट होता है कि मौर्य राज्य और राजनीति भारत के राज्यशास्त्र के हिसाब से ही नहीं, उस समय के दुनिया के राज्यशास्त्र हिसाब से अनूठा और अकेला रहा था। प्रयास रहा था कि एक केन्द्रीकृत सबल राज्य के अधीन प्रजा के व्यापक हित पर राज्य का संचालन हो इसके लिए कानून लागू करने के सेना कर्मचारी नियुक्त किए गये थे। अतः मौर्य राज्य का किसी एक प्रतिस्थापना में बाँधना सही नहीं होगा, बल्कि उसमें चार प्रतिस्थापनाओं को गुण का संयोग बहुत ही सटीक ९ तरीके से मौर्य राजाओं में बैठाया था।

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

संदर्भ ग्रंथे एवं टिप्पणिया

1- के०ए० नीलकंठ शास्त्री-दि ऐज ऑफ नन्दाज एण्ड मौर्याज-पुर्नमुद्रित नई दिल्ली--1965-पृ०-67-68. 2-

2- आर०के० मुखर्जी- चन्द्रगुप्त मौर्य और उसका शासन काल (अनु०) -नई दिल्ली-1960-पृ०-38-40.

3- आर०के० चौधरी-स्टडीज इन कौटिल्याज अर्थशास्त्र-वाराणसी-1967-पृ०-42-43.

4- डी०आर० भंडारकर अशोक (हिन्दी) - पृ०-174-75.

5- बेनी प्रसाद-स्टेट्स इन एंशिएण्ट इण्डिया-पृ०-76-77.

6- फुलेश्वर सिंह-प्राचीन भारत का इतिहास-पृ०-132-33.

7- रोमिला थापर-वंश गोत्र से राज्य तक पृ०-130-32.

8- रामशरण शर्मा-प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ-130-31.

9-आर० के० चौधरी-प्राचीन भारतीय राजनीति शास्त्र और शासन पद्धति-पृ०-22-25.

10- आर०के० चौधरी-प्राचीन भारतीय राजनीति शास्त्र और शासन पद्धति-पृ०-22-25. HISPIS